CHAPTER 21

HINDI

Doctoral Theses

192. आशा रानी

मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में सामाजिक चेतना ।

निर्देशिका : डॉ. शकुन्तला कालरा

Th 15312

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में प्रमुख सामाजिक पहलूओं मानवतावाद, लोक-कल्याण, समष्टि-हित, नारी महत्ता, शोषितों के प्रति सहानुभूति एवं शोषक के प्रति विद्रोह आदि पर विस्तृत ढंग से विचार किया गया है । गुप्तजी युगीन सामाजिक प्रसंग आज भी विचारणीय है । उनके काव्य में समाज के एक महत्वपूर्ण अंग नारी पर विस्तृत ढंग से विचार किया गया है । उनसे पूर्व नारी को या तो तप और त्याग के गुणों से युक्त होकर भारतीयता के आदर्श का लेबल लगााकर जीना पड़ता था या फिर उसे भोग्या रूप में देखा जाता था । सर्वप्रथम गुप्तजी ने नारी का समाज में उसका सम्मानीय स्थान प्रदान किया । बीसवीं शताब्दी की नारी अपनी सामाजिक महत्ता के प्रति पूरी तरह सजग है और पुरुष के समान अपना अधिकार मानती है । आज की नारी भी इस मनुवादी समाज में अपनी अलग पहचान बनाने के लिए संघर्षशील है । समाहार वाक्य के रूप में कहें तो गुप्तजी का काव्य तत्कालीन समाज का जीवंत उदाहरण है । गुप्तजी जनप्रतिनिधि समाज के रचयिता हैं और खड़ी बोली के प्रवर्तक हैं । साथ ही वे युग कवि और राष्ट्रकवि हैं ।

विषय सूची

1. सामाजिक चेतना : अर्थ और स्वरूप 2. समाज के विभिन्न अंग और गुप्तजी की अवधारणा 3. तत्कालीन परिस्थितियों का गुप्तजी के काव्य पर प्रभाव 4. गुप्तजी

के काव्य में समाज सुधार दृष्टिकोण 5. द्विवेदीयुगीन कविता की प्रमुख प्रवृत्तियां और गुप्तजी की विचारधारा 6. गुप्तजी की प्रमुख कृतियों में सामाजिक चेतना। उपसंहार । सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

193. गोसाईं (सारिका)

मुक्तिबोध और रघुवीर सहाय के काव्य की अन्तर्वस्तु ।

निर्देशिका : डॉ. मालती

Th 15314

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में मुक्तिबोध और रघुवीर सहाय के काव्य की अन्तर्वस्तु का आकलन किया गया है । इस प्रयास में एक ओर सामाजिक तथा राजनीतिक यथार्थ की समझ को बल मिला है तथा दूसरी ओर भावनाओं की गहराई को तुलनात्मक स्तर पर समझने में सुविधा प्राप्त हुई है । व्यक्तियों की समानता दो धरातलों पर देखी जाती है -1. बाह्य रूप से तथा 2. अन्तः प्रवृत्तियों के आधार पर । यहां सुखद आश्चर्य यह है कि मुक्तिबोध और रघुवीर सहाय में दोनों धरातलों पर पर्याप्त समानता परिलक्षित होती है । दोनों के व्यक्तिगत जीवन के घटनाक्रम में विस्मयजनक समांनताएं हैं। दोनों कवि एक ही युग (बीसवीं शताब्दी) में दस वर्ष के अन्तराल के साथ पैदा हुए । प्रारंभिक जीवन में परिवार की बड़ी संतान होन के कारण दोनों विशेष लाड़-प्यार के हकदार रहे । आर्थिक कष्ट, पढ़ाई के साथ-साथ पत्र-पत्रिकाओं में लेखन, पारिवारिक जिम्मेदारियां आदि दोनों के जीवन में समान परिस्थितियां रहीं । अन्तः प्रवृत्तियों की दृष्टि से दोनों में और भी अधिक समानता पाई जाती है । दोनों कवि सामाजिक जीवन में दुःख, दीनता, पीड़ा तथा अन्यायों का अनुभव करके अपनी लेखनी द्वारा समाज की समस्त रूढ़ियों, विषमताओं तथा अत्याचारों को भस्म कर देने का प्रयास अपनी लेखनी द्वारा जीवन भर करते रहे। दोनों ने सामयिकता के प्रभाव से प्रेरित होकर देश के स्मन्दनं को वाणी दी है ।

विषय सूची

1. अन्तर्वस्तु-अन्तः वस्तु-अर्थ का आयाम । 2. मुक्तिबोध तथा रघुवीर सहाय के कवि विकास की भावात्मक वैचारिकता का विकास एवं स्वरूप 3. रचना-परिचय

4. मुक्तिबोध तथा रघुवीर सहाय के काव्य की अन्तर्वस्तु 5. अन्तर्वस्तु का रूपाकार । उपसंहार । सन्दर्भ ग्रंथ ।

194. तेवतिया (सुजाता)
हिंदी कहानियों में सीमांतीय अस्मिताओं का प्रश्न : 1970 से 2000 तक।
निर्देशक : डॉ. सुरेन्द्रनाथ सिंह
Th 15311

सारांश

शोध-प्रबंध में सीमांतीयता की सामाजिक निर्मित पर विचार करते हुए सर्वप्रथम लैंगिक परिप्रेक्ष्य पर अर्थात स्त्री व हिजड़ों पर विचार किया गया है । विवेच्य काल की हिंदी कहानियों में इनमें से बहुत से निर्देशांकों को संबोधित किया गया है ।

विषय सूची

1. सीमांतीय अस्मिता : अवधारणा और संदर्भ 2. कहानी का विन्यास और विकास (1970 से पूर्व) 3. 1970 के बाद की हिंदी कहानी : सीमांतीय अस्मिताओं की समाजिक निर्मित 4. 1970 के बाद की हिंदी कहानी : पेशेगत सीमांतीय अस्मिताएं 5. 1970 के बाद की हिंदी-कहानी : धर्म व जातिगत सीमांतीय अस्मिताएं 6. हिंदी कहानियों में सीमांतीय अस्मिताओं का प्रश्न एक समग्र विवेचन। संदर्भ ग्रंथ सूची ।

195. प्रोमिला
हिन्दी के ऐतिहासिक नाटकों के गीतों में सांस्कृतिक चेतना ।
निर्देशक : डॉ. सुरेन्द्रनाथ सिंह
Th 15313

सारांश

हिन्दी के ऐतिहासिक नाटकों में आए गीतों में अभिव्यक्त हुई सांस्कृतिक चेतना को प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में नाटक के स्तर और समाज के परिप्रेक्ष्य में परखने का प्रयास

किया है । पहले अध्याय में नाट्य-साहित्य : भारतीय तथा पाश्चात्य परम्परा का अवलोकन करते हुए नाटक की विभिन्न भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दी गई व्याख्याओं की चर्चा की गई है । नाटक एक ऐसी जटिल कला है जिसका समप्रेषण व आस्वादन सामूहिक होता है । यह व्यक्ति और समाज के बीच की कड़ी है, जो व्यक्ति को समाज में सम्प्रेषित करती है । अतः विषय को गहराई से समझने के लिए भारतीय नाट्य-परम्परा और पाश्यचात्य नाट्य-परम्परा की उत्पति और विकास का विवेचन करते हुए उनकी समानताओं, असमानताओं की चर्चा की गई है । साथ ही, हिन्दी नाट्य-परम्परा के विभिन्न सोपानों पर विस्तृत विचार विमर्श किया गया है ।

विषय सूची

1. नाट्य-साहित्य : भारतीय तथा पाश्चात्य परम्परा 2. ऐतिहासिक नाटक : स्वरूप और रचना प्रक्रिया 3. संस्कृति और साहित्य 4. हिन्दी के ऐतिहासिक नाटक 5. सांस्कृतिक चेतना की अन्तर्वस्तु के रूप में गीतों का महत्त्व 6. हिन्दी के ऐतिहासिक नाटकों के गीतों में सांस्कृतिक चेतना के विविध पक्ष 7. हिन्दी के प्रमुख ऐतिहासिक नाटकों के गीतों में सांस्कृतिक चेतना । उपसंहार । सहायक ग्रंथ सूची ।

196. पाण्डे (काजल)

रीतिमुक्त काव्य में प्रेम और प्रकृति का अंतर्सम्बंध ।

निर्देशक : डॉ. पूरनचन्द टण्डन

Th 15308

सारांश

प्रेम और प्रकृति में अन्तर्सम्बंध की दृष्टि से रीतिमुक्त काव्य का समग्र अध्ययन कर लेने के पश्चात निःसंदेह कहा जा सकता है कि इनके काव्य में इस अंतर्सम्बंध से सौन्दर्य की सृष्टि हुई है इनके प्रेम और प्रकृति के अन्तर्सम्बंध के अध्ययन से इनके काव्य का स्वरूप, अनुभवों की व्यापकता, व्यक्तित्व, कृतित्व, काव्य प्रतिभा का एक व्यापक रूप तथा उत्कृष्ट भाषा-शैली के दर्शन होते हैं। इनके प्रेम और प्रकृति के अंतर्सम्बध में सहजता, स्वाभाविकता और सरलता भी है जो काव्य शैली की

उत्कृष्टता को सिद्ध करती है । समग्रतः कहा जा सकता है कि रीतिमुक्त कवियों को हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान प्राप्त है ।

विषय सूची

1. प्रेम : अवधारणा, स्वरूप और उसके विविध आयाम 2. प्रकृति : अर्थ, स्वरूप और उसकी परिव्याप्ति 3. रीतिमुक्त काव्य, कवि और रचना-संसार 4. रीतिमुक्त काव्य में प्रेम का स्वरूप 5. रीतिमुक्त काव्य में प्रकृति-चित्रण 6. रीतिमुक्त काव्य में प्रेम और प्रकृति का अंतर्सम्बंध 7. रीतिमुक्त काव्य में प्रेम और प्रकृति व्यंजक भाषा । उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

197. बिजेन्द्र कुमार

हिन्दी पत्रकारिता और भूमंडलीकरण ।

निर्देशक : डॉ. प्रेमचंद पातंजलि

Th 15472

सारांश

भूमंडलीकरण में हिन्दी पत्रकारिता के प्रसार, अंतर्वस्तु व कलेवर, सम्पादक, विज्ञापन, सेवा शर्तों और पाठक से जुड़े पहलुओं का विश्लेषण किया गया है । भूमंडलीकरण के प्रमुख सूत्रधारों विश्व व्यापार संगठन, विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा, कोष, बहुराष्ट्रीय कंपनियां और अंतर्राष्ट्रीय साख एजेंसियों का विश्लेषण है ।

विषय सूची

1. भूमंडलीकरण : सैद्धांतिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य पृष्ठ संख्या । 2. हिन्दी पत्रकारिता : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य । 3. भूमंडलीकरण में हिन्दी पत्रकारिता के विविध आयाम । 4. भूमंडलीकरण के प्रमुख सूत्रधार और हिन्दी पत्रकारिता । 5. भूमंडलीकरण के मुद्दे और हिन्दी पत्रकारिता । 6. सर्वेक्षण (एक माह के नौ प्रमुख हिंदी दैनिकों का) । 7. उपसंहार । परिशिष्ट एवं सन्दर्भ ग्रंथ सूची ।

198. भगत (जितेन्द्र कुमार)

जेण्डर की समस्या और समकालीन महिला-लेखन (1990 के बाद के उपन्यासों के विशेष संदर्भ में) ।

निर्देशक : प्रो. अजय तिवारी

Th 15498

सारांश

जेण्डर और स्त्री-विमर्श का वैचारिक पक्ष एक दूसरे से काफी संबंद्ध है - फर्क इतना है कि जेण्डर पर बात करते हुए स्त्रीवाद के मताग्रह या दुराग्रह से काफी हद तक बजा जा सकता है । हिन्दी साहित्य का अध्ययन करते हुए अनुभव किया जा सकता है कि साहित्यिक ऊर्जा के रूप में स्त्री एक प्रेरणा-स्रोत है और अब तक उसी को आधार बनाकर रचनाकर परिवेश के अन्य संदर्भों व सरोकारों की तरफ गतिशील होते आए हैं । सवाल है कि रचना के केन्द्र में तो स्त्री है, पर रचनाशीलता की परिधि में स्त्री अब तक क्यों अनुपस्थित रही ? महिला-लेखन के समकालीन परिदृश्य ने यह अवसर सुलभ कराया कि समाज और इतिहास को देखने वाली पुरूषवादी दृष्टि की पुर्नव्याख्या की जाए और प्रवक्ता के रूप में महिला उपन्यासकारों को चुना जाए । उपन्यास का यथार्थ से सीधा संबंध है और कविता-लेखन के समानांतर स्त्री रचनाकारों ने इस विधा में जिस उर्जा के साथ प्रवेश किया है, वह चौंकानेवाली है । कारण यह है कि दो दशक पहले स्त्री-रचनाकारों में मीरा, महादेवी, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती जैसे दो-चार नाम ही स्थापित थे । क्या कारण है कि साहित्य-पटल पर एक तरफ चित्रा मुद्गल, मैत्रेयी पुष्पा, मृदुला गर्ग, अलका सरावगी, उषा प्रियंवदा, मेहरून्निसा परवेज़, नासिरा शर्मा, मृदुला सिन्हा, गीतांजलि श्री, प्रभा खेतान, ममता कालिया, मंजुल भगत, राजी सेठ उपन्यास के माध्यम से मोर्चा संभाल रही हैं ; दूसरी तरफ अनामिका, कात्यायनी, निर्मला गर्ग, निलेश रघुवंशी, सविता सिंह, गगन गिल कविता, के मोर्चे पर डटी हैं । कुल मिलाकर ये स्त्रियाँ पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक असंतोष के साथ-साथ सृजनात्मक असंतोष से भरी हुई हैं, जो उन्हें लगातार प्रेरित करता है कि पुरूष वर्चस्ववाद के खिलाफ मोर्चा कायम हो, जिससे निजि स्वतंत्रता और स्त्री-पुरूष समानता में ईमानदारी को अर्जित किया जा सके । 1990 से अब तक का समय महिला-उपन्यासकारों के लिए खासा चर्चित रहा है । इनके उपन्यासों के आलोक में जेण्डर-समस्या को देखना काफी रोचक रहा ।

विषय सूची

1. जेडर-चेतना का उदय । 2. महिला उपन्यास-लेखन और उसके सरोकार । 3. समकालीन उपन्यासों में पारिवारिक संरचना और स्त्री-मानस का अनुकूलन। 4. समकालीन उपन्यासों में विवाह-संस्था की भूमिका । 5. समकालीन उपन्यास : सार्वजनिक-औद्योगिक संस्थानों में स्त्री-श्रम और स्त्री-छवि । 6. सामाजिक-वैचारिक प्रश्न और जेंडर की समस्या । उपसंहार एवं संदर्भ-ग्रन्थ-सूची ।

199. रक्षा गीता

धर्मवीर भारती के साहित्य में परिवेश-बोध

निर्देशक : डॉ. रमेश शर्मा (दिविक रमेश)

Th 15309

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में भारती के साहित्य में परिवेश-बोध का आकलन उपरान्त इस निष्कर्ष पर पहुचा गया है कि भारती का काव्य, कथा-साहित्य, निबंध, लेख, समीक्षा, एकांकी, संस्मरण, यात्रा-वृत्त, पत्र, डायरी आदि अपने परिवेश की सामाजिक जटिलताओं को प्रस्तुत करते हैं, राजनीतिक कुचक्रों का प्रखता से पर्दाफाश करते हैं, सांसकृतिक मूल्यों के विघटन पर चिंता व्यक्त कर नव-संस्कृति के निर्माण के लिए आकुल दीखते हैं, आर्थिक विषमताओं को दूर कर सामाजिक समानता का स्वप्न देखते हैं, और वैचारिक-स्वतंत्रता के पक्षधर भारती भारतीय और पाश्चात्य विचारों व संस्कृतियों के समन्वय के द्वारा मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए प्रयासरत हैं । उनके साहित्य के कुछेक अंशों को रेखाकिंत कर उन्हे परिवेश-निरपेक्ष घोषित करने वालों की भी कमी नहीं लेकिन भारती परिवेश बोध संपृक्त साहित्यकार है ऐसा हमें घोषित करने की आवश्यकता नहीं उनका साहित्य इस बात का जीता जागता प्रमाण है ।

विषय सूची

1. परिवेश-बोध : अर्थ व स्वरूप 2. धर्मवीर भारती के विविध आयाम 3. धर्मवीर भारती के साहित्य में परिवेश-बोध 4. धर्मवीर भारती के काव्य में परिवेश-बोध 5. धर्मवीर भारती के कथा-साहित्य में परिवेश-बोध 6. धर्मवीर भारती कें एकांकी

संग्रह में परिवेश-बोध 7. धर्मवीर भारती के वैचारिक साहित्य में परिवेश बोध (निबंध, समीक्षा, लेख, संपादकीय आदि) 8. धर्मवीर भारती के स्फुट साहित्य में परिवेश-बोध । उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

200. राकेश कुमार

नवलेखन का रचनात्मक विमर्श और मलयज का सृजन कर्म ।

निर्देशक : प्रो. कृष्णदत्त पालीवाल

Th 15307

सारांश

यह शोध-कार्य इतिहास के महत्त्वपूर्ण काल-खण्ड के महत्त्वपूर्ण साहित्य नवलेखन के रचनात्मक विमर्श के माध्यम से आधुनिक हिंदी साहित्य के वैशिष्ट्य को रेखांकित करता है । नवलेखन के परिप्रेक्ष्य में, अन्वेषण का प्रयास है । मलयज के व्यक्तित्व के निर्माण में नवलेखन के योगदान को नकारा नहीं जा सकता क्योंकि मलयज का सम्पूर्ण सृजनकर्म उसी नवोन्मेष का प्रतिफलन है जोकि नवलेखन को निर्मित करता है । मलयज की कविता, आलोचना, व सृजनात्मक गद्य पर नवलेखन के प्रभाव को देखा जा सकता है । मलयज के बारे में कहा जाता है कि मलयज मूलतः कवि थे जिनकी कविता का प्रभाव उनकी आलोचना पर पड़ा पर साथ ही साथ यह भी सही है कि आलोचना और कविता उनके लिए अलग-अलग और एक दूसरे की एवजी वाले कार्य नहीं थे । वे आलोचना को रचना की तुलना में दोयम दर्जे का सृजन कर्म नहीं मानते । उन्होंने सृजन को अपने जीवन का ध्येय बना रखा था । साधारण मनुष्य को अपने साहित्य और आलोचना का हीरो मानने वाले मलयज ने अपने जीवन संघर्ष को अपने रचना संघर्ष से अभिन्न कर लिया था।

विषय सूची

1. नवलेखन का परिवेश 2. नवलेखन की पृष्ठभूमि 3. नवलेखन का रचनात्मक विमर्श 4. मलयज का सृजनकर्म 5. मलयज की आलोचना । उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

201. राय (संगीता)

हिन्दी के हम्मीर-विषयक काव्य में सौन्दर्य बोध

निर्देशिका : डॉ. विनीता कुमारी

Th 15315

सारांश

हम्मीर-काव्य रासो-परम्परा के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं । जिसमें वीर-रस को काव्य के अंगीरस के रूप में स्वीकार किया गया है । साथ ही शृंगार को प्रमुखता देते हुए काव्य के अनेक अंगों का वर्णन किया गया है । ये काव्य कलापक्ष तथा भावपक्ष की दृष्टि से उत्कृष्ट काव्य होते हुए भी दुर्भाग्य से इनकी समीक्षा का कोई स्वतन्त्र ग्रंथ उपलब्ध नहीं है । कतिपय लेख ही इस विषय में मिलते हैं । इसलिए इन ग्रंथों का स्वतंत्र रूप से अध्ययन उपयोगी प्रतीत होता है । रीतिकाल में रचित शृंगार काव्यों पर आलोचकों तथा पाठकों की दृष्टि पड़ी, किन्तुं वीरकाव्यों में यह अध्ययन भूषण तक ही सीमित होकर रह गया । वीर-रस की सौन्दर्यमयी अनुभूति में लीन इन कवियों की सौन्दर्य-चेतना के अध्ययन का कार्य अब तक रिक्त पड़ा था । मात्र कवियों की ही नहीं वरन् उनके युग के काव्य की आत्मा सौन्दर्य दृष्टि ही थी । वास्तव में सौन्दर्य बोध का विवेचन ही कवियों की कलात्मक अभिव्यंजना की मूल चेतना को स्पष्ट कर सकता है ।

विषय सूची

1. सौन्दर्य-बोध : अभिप्राय, स्वरूप एवं महत्त्व 2. हम्मीर विषयक रचनाओं के रचनाकारों का जीवन-परिचय, व्यक्तित्व एवं उनका रचना-संसार 3. रासो-काव्य परम्परा तथा हम्मीर-विषयक काव्य 4. वस्तु-सौन्दर्य और हम्मीर विषयक काव्य 5. हम्मीर विषयक काव्यों में कल्पना, बिम्ब एवं प्रतीक 6. शिल्प सौन्दर्य और हम्मीर विषयक काव्य । उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

202. वीरेन्द्र सिंह

बीसवीं सदी के अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में सांप्रदायिक समस्या।

निर्देशक : डॉ. कुश सत्येनद्र

Th 15471

सारांश

राष्ट्र और राष्ट्रीयता की परिभाषा हमारे लोकतंत्र के समक्ष कुछ अस्पष्ट सी लगती है । जब किसी देश के लोकतंत्र में राष्ट्र के नागरिकों के सामने अपनी राष्ट्रीयता का बोध न हो तो उस राष्ट्र के नागरिकों के लिए इससे खतरनाक चीज़ कोई नहीं हो सकती । हमारे देश के राजनेताओं, शासकों और धर्म गुरूओं ने हमें राष्ट्र का सही अर्थों में बोध नहीं होने दिया इसलिए आज भी यह एक गंभीर समस्या है । सांप्रदायिकता के मूलभूत कारणों की तलाश करते हुए समाज पर इस समस्या से पड़ने वाले प्रभावों की विवेचना करने का एक प्रयास किया है । इसी दृष्टि से सांप्रदायिक समस्याओं के मूलभूत कारणों को अपनी और दूसरों की दृष्टि से देखा-परखा और समाज पर इस समस्या से पड़ने वाले प्रभाव का मूल्यांकन करने का भी प्रयास किया है ।

विषय सूची

1. सांप्रदायिकता अवधारणा और स्वरूप । 2. हिंदी पत्रकारिता और सांप्रदायिकता समस्या । 3. भारतीय पुलिस और सांप्रदायिकता । 4. मध्यकाल और सांप्रदायिकता। 5. प्रेमचंद और प्रंमचंदोत्तर युगीन समाज में सांप्रदायिकता समस्या । 6. अंतिम दशक के उपन्यास और सांप्रदायिकता समस्या । उपसंहार, परिशिष्ट एवं संदर्भ-ग्रंथ-सूची ।

203. शर्मा (सतीश चन्द्र)

बीसवीं सदी के अंतिम दशक के महिला कथा लेखन में पारिवारिक संबंध ।

निर्देशिका : डॉ. अरुणा गुप्ता

Th 15316

सारांश

यह शोध-प्रबंध महिला लेखिकाओं के बारे में बंध-बंधाए दृष्टिकोण को तोड़ता है । यह उन मुद्दों और पहलुओं की खोजबीन करता है जिनमें कि एक नारी अपने दृष्टिकोण से शेष समाज की जांच पड़ताल करती है । इनमें भी खासकर पारिवारिक

सम्बन्धों की बात की गयी है, जिसे एक महिला देखती और भोगती है । अतः यह एक नया दृष्टिकोण होगा जो कि महिला कथा लेखन को नई दिशा दे सकता है । शोध प्रबंध में इस बातपर विशेष जोर दिया गया कि समय के बदलते स्वरूप के साथ जब भी पूरुषवादी आलोचकों ने महिला लेखन पर अश्लीलता का आरोप लगाया तब-तब महिला कथाकारों ने अपनी आक्रामक लेखनी से नारी की बंधन से छटपटाहट और मुक्ति के आहवन की गाथा का सुत्रपात किया ।

विषय सूची

1. हिन्दी कथा साहित्य और महिला लेखन 2. बीसवीं सदी का प्रवेश और महिला 3. महिला लेखन में अभिव्यक्त पारिवारिक संबंध 4. स्त्री-पूरुष संबंध, कथा साहित्य एवं महिला लेखन 5. महिला लेखन में अभिव्यक्त परिवार और समाज के अन्तः संबंधों का समाजशास्त्रीय अध्ययन 6. स्त्री-विमर्श और अध्ययन की समस्याएं संदर्भ अंतिम दशक का कथा साहित्य । उपसंहार । परिशिष्ट।

204. शुभ नारायण सिंह

स्वातन्त्र्योत्तर भारत के ग्रामीण समाज में बदलते मानव-संबंध और फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास।

निर्देशक : डॉ. तेज सिंह

Th 15310

सारांश

सामजिक सांस्कृतिक संबंधों के सैद्धांतिक अध्ययन ने फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में निहित सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों को समझने में अहम योगदान दिया है । रेणु के व्यक्तित्व और विचारधारा ने भी उनके उपन्यासें में निहित दृष्टि से साक्षात्कार करनक में सहयोग प्रदान किया है । रेणु का व्यक्तित्व और विचारधारा अंतविर्रोधों से घिरे हुए प्रतीत होते हैं । लेकिन रेणु के जीवन के तमाम अंतर्विरोध स्वातन्त्र्योत्तर भारतीय राजनीति के भी अंतर्विरोध हैं, जो रेणु की सामाजिक-राजनीतिक चेतना एवं उनकी रचनाओं में दिख पड़ता है । फिर भी तमाम अंतर्विरोधों के बावजूद रेणु की सामाजिक-राजनीतिक सक्रियता एवं लोक-संस्कृति पर उनकी गहरी पकड़ को नकारा नहीं जा सकता । ताउम्र वे सकारात्मक बदलाव के लिए संघर्षरत रहे।

1. मानव व समाज : व्यष्टि-समष्टि के संघर्ष की सैद्धांतिकी 2. जमीन से जुड़ा रेणु का मन : शब्द, अर्थ और आशय 3. सामाजिक-सांस्कृतिक यथार्थ की यात्राः रूढ़ परंपरा से चेतना की ओर 4. राजनीतिक यथार्थ की यात्रा : सामंती-पूंजीवादी शोषण से मुक्ति की आकांक्षा 5. आर्थिक यथार्थ की यात्रा : विषमता से समता की ओर 6. धार्मिक यथार्थ की यात्रा : ग्रामीण शोषण का मठतंत्र । उपसंहार । परिशिष्ट।

M.Phil Dissertations

205. अनिल कुमार
रहीम के काव्य में नैतिक मूल्य ।
निर्देशक : प्रो. के. एन. तिवारी

206. आर्य (गायत्री)
भाग्यवती और नवजागरण के स्त्री-प्रश्न ।
निर्देशक : डॉ. प्रेम सिंह

207. कपिल देव
लोकतंत्र की अवधारणा और हँसो हँसों जल्दी हँसो ।
निर्देशिका : डॉ. कुमुद शर्मा

208. कमलेश कुमारी
मीराकांत के नाटक नेपथ्य राग में स्त्री-विमर्श ।
निर्देशक : प्रो. रमेश गौतम

209. किम योड. जड.
लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों में महाभारत मिथक का रचनात्मक उपयोग ।
निर्देशक : प्रो. रमेश गौतम

210. कुशवाहा (रामाशंकर)
मित्रो मरजानी में भाषिक यौनता का प्रश्न ।
निर्देशिका : डॉ. कुमुद शर्मा

211. खिल्लन (पूजा)
ब्लैक फिल्म का चिन्हशास्त्रीय अध्ययन ।
निर्देशक : प्रो. सुधीश पचौरी

212. खोरवाल (पूजा)
नीति-सतसई में सौंदर्य-चेतना ।
निर्देशक : डॉ. पूरनचंद टण्डन

213. चंदा रानी
विनय पत्रिका में सौंदर्य-चेतना ।
निर्देशक : प्रो. पूरनचंद टण्डन

214. चौधरी (अरूणा)
उतना वह सूरज है में सामाजिक यथार्थ
निर्देशक : प्रो. कृष्णदत्त पालीवाल

215. जालान (मीरा)
वेणु गोपाल का काव्य : सत्ता और समाज ।
निर्देशक : प्रो. गोपेश्वर सिंह

216. जैन (कीर्ति)
नीलेश रघुवंशी की कविताओं में स्त्री-अस्मिता और वर्ग-चेतना का संबंध ।
निर्देशक : प्रो. अजय तिवारी

217. झरवाल (अंशु सिंह)
बिहारी सतसई में ऊहात्मकता ।
निर्देशक : डॉ. मुकेश गर्ग

218. दिवाकर (दिनेश कुमार)
छप्पर में दलित-चेतना ।
निर्देशक : डॉ. कृष्णदत्त शर्मा

219. धनंजय कुमार
रामचरितमानस में माया का स्वरूप ।
निर्देशक : प्रो. के. एन. तिवारी

220. नवीन चन्द्र
मिट्टी का चेहरा में प्रगतिशील चेहरा ।
निर्देशक : प्रो. हरिमोहन शर्मा

221. नायक (विभा)
डिस्कवरी चैनल में प्रस्तुत भारत (फीस्ट इंडिया के संदर्भ में) ।
निर्देशिका : डॉ. सुधा सिंह

222. नीरज
भूमंडलीकरण और राजेश जोशी की कविता (दो पंक्तियों के बीच और चांद की वर्तनी)
निर्देशक : प्रो. अजय तिवारी

223. नीरू रानी
परीक्षा गुरू में देशोन्नति की धारणा ।
निर्देशक : प्रो. कृष्णदत्त पालीवाल

224. परमशीला
हिंदुस्तान के फ़ीचर-पृष्ठों पर सौंदर्य-मानकों का निर्माण (मई, जून, जुलाई 2006 के अंक) ।
निर्देशिका : डॉ. कुमुद शर्मा

225. प्रसाद (सोनी)
रीतिमुक्त काव्य में आधुनिकता के तत्त्व ।
निर्देशक : डॉ. मुकेश गर्ग

226. महतो (निरंजन)
डॉ. धर्मवीर की आलोचना-दृष्टि (संदर्भ-कबीर) ।
निर्देशक : डॉ. प्रेम सिंह

227. मीणा (जयसिंह)
करौली ब्रजक्षेत्र के संस्कार-गीतों का समाजशास्त्रीय अध्ययन ।
निर्देशक : डॉ. सुरेन्द्रनाथ सिंह

228. मिश्र (माया)
कुमारेन्द्र पारस नाथ सिंह की कविताओं में सामाजिकता ।
निर्देशक : प्रो. गोपेश्वर सिंह

229. मिश्र (शशिभूषण)
सूर के भ्रमरगीत की प्रगतिशील अंतर्वस्तु ।
निर्देशक : डॉ. मुकेश गर्ग

230. यादव (अरविन्द कुमार)
जातिवादी समाज और कुल्लीभट ।
निर्देशक : डॉ. सुरेन्द्रनाथ सिंह

231. यादव (विरेन्द्र कुमार)
दलित-विमर्श और धरती धन न अपना ।
निर्देशक : डॉ. तेज सिंह

232. राकेश बिहारी
धूमिल कृत कल सुनना मुझे में समयण सत्ता एवं राजनीति ।
निर्देशक : डॉ. अपूर्वानंद

233. राजेश कुमारी
क्या कहना फिल्म का चिन्हशास्त्रीय अध्ययन ।
निर्देशिका : डॉ. सुधा सिंह

234. विजय देवी
पद्‌मावत और मृगावती के स्तुतिखंड का तुलनात्मक अध्ययन ।
निर्देशक : डॉ. मोहन

235. वीरेन्द्र कुमार
कथा सतीसर में निर्वासन की पीड़ा ।
निर्देशक : डॉ. कृष्णदत्त शर्मा

236. शर्मा (नीता)
ठाकुर के काव्य में विद्रोह-भावना ।
निर्देशक : डॉ. सुधीश पचौरी

237. श्रीवास्तव (ब्रजेन्द्र कुमार)
कवितावली में युगीन यथार्थ ।
निर्देशक : डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल

238. संजीत कुमार
नागार्जुन के काव्य में सत्य की अवधारणा ।
निर्देशक : प्रो. अजय तिवारी

239. संदीप कुमार
सेनापति के काव्य में प्रकृति चित्रण ।
निर्देशक : डॉ. मोहन

240. सिंह (दीपेन्द्र कुमार)
भूमण्डलीकरण के दौर में भारतेंदु के स्वत्व की सार्थकता ।
निर्देशक : प्रो. हरिमोहन शर्मा

241. सिंह (राकेश कुमार)
आख़िरी कलाम में साम्प्रदायिकता का प्रश्न ।
निर्देशक : प्रो. गोपेश्वर सिंह

242. स्नेह लता
अल्मा कबूतरी में विमुक्त जनजातियों की समस्याएँ ।
निर्देशक : डॉ. अपूर्वानंद

243. हरकेश कुमार
ठाकुर के काव्य में सौंदर्य-चेतना ।
निर्देशक : डॉ. पूरनचंद टण्डन

244. ज्ञानेन्द्र कुमार
आपातकाल के सामाजिक, वैचारिक प्रश्न और हिंदी उपन्यास ।
निर्देशक : डॉ. अपूर्वानंद